श्रुतिः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं पुराणमप्यत्र वरं प्रमाणम्।
यत्रास्ति गङ्गा यमुना प्रमाणं स तीर्थराजो जयति प्रयागः॥

श्रीप्रयागक्षेत्रमाहात्म्यसारसंग्रहः

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रकाशन विभाग द्वारा, माननीय कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेडी जी के मार्गदर्शन में, आचार्य नारायण पूजार जी द्वारा देवनागरी लिपि में पुनः संपादित "श्री प्रयाग क्षेत्र माहात्म्य सार संग्रह" का लोकार्पण आज माघ शुक्ल तृतीया (01/02/2025)को संपन्न हो रहा है।

यह ग्रंथ संस्कृत प्रेमियों एवं अध्येताओं के लिए अत्यंत उपयोगी एवं पठनीय है। माननीय कुलपति प्रो. वरखेडी जी ने इस महत्वपूर्ण कृति के निःशुल्क वितरण की घोषणा की है, ताकि अधिकाधिक संस्कृत प्रेमी इसका नियमित पारायण कर सकें एवं प्रयाग क्षेत्र की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्ता को गहराई से समझ सकें।

इस ग्रंथ को डाउनलोड कर पारायण करने हेतु नीचे दिए गए लिंक का उपयोग करें:

https://drive.google.com/file/d/1bfTJXPfjjFYM3hbkrOMlU-8WqaCP1ltB/view?usp=sharing

राजसूयसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च।
माघे सितासिते पुण्यं मज्जतां भवति ध्रुवम्॥

तीर्थराजप्रयागक्षेत्रम्
विक्रमसंवत्सरः - २०८१, पिङ्गलः, माघशुक्लतृतीया
शकसम्वत्सरः - १९४६, क्रोधी
दिनाङ्कः- १ फरवरी, २०२५